ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 19 अंक 11 कुल पृष्ठ-8 11 से 17 अप्रैल, 2024 दयानन्दाब्द 199 सृष्टि सम्वत् 1960853124 सम्वत् 2080 चै. कृ.-10

चैत्र शुक्ल प्रतिप्रदा काल नामक सम्वत् 2081 के अवसर पर सन्त शिरोमणि तपोनिष्ठ संन्यासी, वेदों के मर्मज्ञ स्वामी विवेकानन्द सरस्वती कुलाधिपति गुरुकुल प्रभात आश्रम के ब्रह्मत्व में

28वां जन-चेतना महायज्ञ मंगलवार 9 अप्रैल, 2024 को

महाराणा प्रताप प्रांगण (जीमखाना मैदान) मेरठ में हुआ भव्यता के साथ सम्पन्न

स्वामी आर्यवेश जी की भी रही गरिमामयि उपस्थिति

गुरुकुल प्रभात आश्रम टिकरी, भोलाझाल मेरठ के तत्वावधान में आर्य समाज स्थापना दिवस एवं नव-सम्वत्सर के उपलक्ष्य में 28वाँ जनचेतना महायज्ञ मंगलवार 9 अप्रैल, 2024 को प्रातः 7.30 से 9 बजे तक महाराणा प्रताप प्रांगण (जीमखाना मैदान) मेरठ में विशाल स्तर पर आयोजित किया गया। इस 521 कुण्डीय जन-चेतना महायज्ञ के ब्रह्मा गुरुकुल प्रभात आश्रम के कुलाधिपति पूज्य स्वामी विवेकानन्द सरस्वती जी महाराज थे। अस्वस्थ होने के कारण उनकी अनुपस्थिति में यह दायित्व स्वामी आर्यवेश जी ने निभाया। इस महायज्ञ में हजारों लोगों ने भाग लेकर आहुतियां प्रदान की। गुरुकुल प्रभात आश्रम के ब्रह्मचारियों ने सस्वर वेद पाठ तथा गुरुकुल के मंत्री आचार्य वाचस्पति जी ने इस विशाल यज्ञ का पौरोहित्य किया। इस विशेष आयोजन की अध्यक्ष श्रीमती कुसुम शास्त्री, मुख्य संयोजक श्री राजेश सेठी, मार्गदर्शन प्रमुख श्री अजय गुप्ता, प्रभारी श्री अशोक सुधाकर एवं समन्वयक श्री विक्रम शास्त्री के अतिरिक्त गुरुकुल प्रबन्ध कारिणी समिति के प्रधान श्री विवेक शेखर, मंत्री आचार्य वाचस्पति, कोषाध्यक्ष श्री योगेश कुमार, व्यवस्था प्रमुख श्री अरुण जिन्दल तथा संयोजक सर्वश्री चन्द्रकान्त, अनुज शर्मा, सुशील बंसल व मनीष शर्मा आदि ने विशेष प्रयत्न एवं पुरुषार्थ करके कार्यक्रम को सफल बनाया।

इस अवसर पर अपने विशेष उद्बोधन में स्वामी आर्यवेश जी ने आह्वान किया कि हमें चैत्र प्रतिप्रदा से प्रारम्भ होने वाले नववर्ष एवं नव विक्रम सम्वत् को ही अपना नया वर्ष स्वीकार करके मनाना चाहिए। सामान्य रूप से 1 जनवरी को नये वर्ष का प्रथम दिन माना जाता है, जो कि किसी भी प्रकार से तर्क सम्मत नहीं है। अतः हमें 1 जनवरी की बजाय चैत्र प्रतिप्रदा के दिन को ही नव-वर्ष शुभारम्भ के रूप में मनाने का संकल्प लेना चाहिए। स्वामी आर्यवेश जी ने सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर महाभारत पर्यन्त समस्त उन ऋषियों जिन्होंने वैदिक सनातन संस्कृति को जीवित रखा तथा महर्षि दयानन्द सरस्वती एवं उनके अन्य समस्त सहयोगियों जिन्होंने संस्कृति रक्षा के इस अभियान को आगे बढ़ाया, उस संस्कृति की रक्षा के लिए सभी

शेष पृष्ठ 4 पर

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

चैत्र शुक्लपक्ष प्रतिपदा को नव–संवत्सर (नववर्ष) मनाकर गर्व करें

– गंगाशरण आर्य 'साहित्य सुमन'

विश्व में मानव जीवन के इतिहास की काल गणना में प्राचीन परम्परा ही वैज्ञानिक नजर आती है। सम्वत् चाहे किसी नाम से तथा कहीं भी आरम्भ किये गये हों किन्तु इन सबका आरम्भ करने की परम्परा एक ही दिन चैत्र शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से की जाती रही है। पूरे देश में विभिन्न पर्वों के रूप में इस दिवस को मनाया जाता है। इसमें चेती चाँद का त्यौहार, गुड़ी पड़वा का त्यौहार, उगादी त्यौहार भी इसी दिन मनाया जाता है। नये कार्यों का आरम्भ भी नववर्ष की प्रतिपदा से ही करने की परम्परा आज भी बनी हुई है। नव सम्वत् के साथ ही भारत का प्रत्येक कार्यक्षेत्र चैत्र (अप्रैल) माह के प्रथम दिन से प्रारम्भ होता है। विद्यालयों में बच्चों की नई कक्षाओं का प्रारम्भ भी चैत्र माह से ही होता है। इसे वित्तीय वर्ष भी कहते हैं। लेकिन नववर्ष मनाया जाता है 1 जनवरी को? दरअसल हमारे देशवासियों की गुलामी की मानसिकता की जड़ें इतनी गहरी हो गई हैं कि उनको उखाड़ फेंकना इतना आसान नहीं। हैरानी की बात तो यह है कि गुलामी की दौर में स्वराज्य की लड़ाई के दिनों में भी सबकुछ स्वदेशी था। लेकिन स्वतंत्र भारत में अब सब कुछ विदेशी हो गया है। आर्यावर्त भारत देश का कितना बड़ा दुर्भाग्य है कि इस पवित्र दिन को हम 'अप्रैलफूल' अर्थात् मूर्ख दिवस बनाने का दिन बताते हैं। भारतीय संवत्सर को जो कि दुनिया का सर्वप्रथम, सर्वश्रेष्ठ एवं नैसर्गिक सम्वत्सर है, झुठलाकर 1 जनवरी विदेशी नववर्ष को हर्षोल्लास के साथ मनाने में हम ही अग्रणीय नहीं हैं बल्कि ये राजनेता भी जनता की इस बेवकूफी में बढ़–चढ़कर हिस्सा लेते हैं। राजनेताओं को स्पष्ट रूप से पता है कि देश की वित्तीय व्यवस्था को संचालित करने वाले वित्तीय वर्ष का प्रथम दिन 1 अप्रैल का दिन होता है फिर भी अंग्रेजियत का भूत इतना चढ़ा है कि 1 जनवरी पर ही नववर्ष की शुभकामनाएँ एवं बधाईयाँ बड़े–बड़े फ्लैक्स बोर्ड लगाकर देते हैं। एक माह पूर्व ही विदेशी नववर्ष की तैयारियाँ भारत में शुरू कर दी जाती हैं। करोड़ों रुपये का खर्चा इस उत्सव के लिए व्यय किया जाता है।

आज हमें स्वाधीन हुए 100 वर्ष भी नहीं हुए हैं और हम अपनी संस्कृति, सभ्यता की घोर उपेक्षा कर रहे हैं, अभी भी राजनैतिक गुलामी सिर पर सवार है। प्राचीन वैदिक संस्कृति के जवाब में विश्व के किसी भी कोने में इतनी आदर्श संस्कृति का उदाहरण मिलना अत्यन्त मुश्किल है। नया वर्ष ईसाईयों के यहाँ इसे न्यू इयर्स डे कहते हैं वहीं 1 जनवरी को होता है। भारत में स्वाधीनता से पूर्व इसका कोई महत्त्व ही नहीं था। आज तो इसके पीछे गाँव से लेकर शहर के बच्चे, बड़े, माता–बहनों के दिमागों में पागलपन सवार है और पश्चिमी सभ्यता की धूल हमारे ऊपर छाई हुई है। यह 21वीं शताब्दी है जो ईसवी संवत् के अनुसार होती है। यदि सृष्टि सम्वत् की दृष्टि से देखेंगे तो सृष्टि को बने हुए 1960853121 वर्ष हो चुके हैं और 122वाँ वर्ष प्रारम्भ हो रहा है। इससे यह सिद्ध हुआ कि करोड़ों शताब्दियाँ हमने बिताई और लाखों शताब्दी आने वाली है। इतने लम्बे इतिहास को झुठलाकर संसार को केवल मात्र 20 गिनी–चुनी शताब्दी पुराना कहना अपने आपमें बहुत बड़ी भूल है और ईश्वर की व्यवस्थाओं को नकाने का प्रयास है। सृष्टि के रचयिता परमपिता परमात्मा ने वनस्पति एवं सम्पूर्ण जीव–जगत की रचना करने के उपरान्त यहाँ तक कि छहों ऋतुओं को उत्पन्न कर पृथ्वी माता को दुल्हन की तरह सजाकर तत्पश्चात् मनुष्य को उत्पन्न किया। क्योंकि ईश्वर की सारी ही कृतियों में मानव सर्वश्रेष्ठ कृति है। पृथ्वी माता के आंचल में मनुष्य ने सर्वप्रथम अपने नेत्र खोले, उस समय दिसम्बर की कड़कती ठंड नहीं बल्कि वसन्त ऋतु अपनी सुन्दरतम आभा बिखेर रही थी। समझने की बात यह है कि कोई भी इंजीनियर जब किसी इंजन या किसी मशीन का निर्माण करता है तो साथ में जानकारी के लिए एक परिचय पुस्तिका भी देता है जिसमें उसकी सम्पूर्ण जानकारी होती है। उसी प्रकार उस सर्वशक्तिमान महा इंजीनियर ने सृष्टि रूपी मशीन का निर्माण किया तब वेद रूपी ज्ञान उन प्रथम महामानवों (अग्नि, वायु, आदित्य एवं अंगिरा) के अन्तःकरण में दिया। वेद सम्पूर्ण ज्ञान–विज्ञान के भण्डार हैं। वेद ज्ञान के आधार पर हमारे प्राचीन महामनीषियों, ऋषि–मुनियों ने आदि सृष्टि से लेकर आज तक हर पदार्थ का विवरण रखा है। आदि सृष्टि से ही आर्यों में चैत्र मास की शुक्लपक्ष की प्रतिपदा को ही नववर्ष दिवस के रूप में मनाने की प्रथा प्रचलित है।

सृष्टि सम्वत् के सम्बन्ध में एक और अकाट्य प्रमाण प्रस्तुत है। इस देश के इतिहास को विदेशी आक्रान्ता जब नष्ट करने लगे तो आर्यों ने इतिहास सुरक्षित करने के लिए सृष्टि के गणित का इतिहास संकल्प के रूप में कंठस्थ कर लिया था जो आज भी व्यवहार में प्रचलित है जिसे नित्यप्रति किसी भी शुभ कार्य विवाह संस्कार आदि करने से पूर्व यज्ञ के समय पुरोहित अपने यजमान से संकल्प करवाते समय बुलवाता है। इस प्रकार सृष्टि के आदि से लेकर मनवन्तर युग–युगान्तर, वर्ष, माह, पक्ष, तिथि, दिन, नक्षत्र, मुहुर्त, लग्न, घड़ी, पल, विपल तक का हिसाब आज तक मौजूद है। ऋतुराज वसन्त में चैत्र शुक्लप्रतिपदा से ही हमारा प्राचीन आर्यावर्तीय सम्वत्सर प्रारम्भ हुआ। दुनिया के महान गणितज्ञ भास्कराचार्य ने भी इसी दिन से ही सूर्योदय से सूर्यास्त तक दिन, महीना और वर्ष की गणना करते हुए पंचांग की रचना की थी। इसी दिन ही मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम का राज तिलक भी हुआ था। महाराज युधिष्ठिर का भी राज तिलक इसी दिन हुआ था। इसी प्रकार अन्य अनेक ऐतिहासिक घटनाएँ इस शुभ दिन के साथ जुड़ी हैं। आज ही के दिन कलियुग के प्रथम सम्राट परिक्षित के सिंहासनारूढ़ होने का भी दिन है। आज ही के दिन समाज सुधार के युग प्रणेता स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने आर्य समाज की स्थापना की थी। अन्त में पाठकों से मेरा नम्र निवेदन है कि विदेशी गुलामी के प्रतीक 1 जनवरी बनावटी नववर्ष का परित्याग करें और अपनी स्वतंत्रता, स्वाभिमान और स्वावलम्बन को ध्यान में रखकर इस अवैज्ञानिक, तर्कहीन तथ्यों पर आधारित ईस्वी सन् को छोड़कर अपने भारतीय सम्वत् विक्रम सम्वत् को ही अपनायें जो वैज्ञानिक और प्राकृतिक तथ्यों पर आधारित है। इस विषय में यही कहना चाहूँगा कि '

'दास्ता की निशानी को नई–पीढ़ी पर से उठाना है।
चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को ही नववर्ष हमें मनाना है।।

इस बार 13 अप्रैल, 2021 को भारतीय नव सम्वत्सर का प्रारम्भ हो रहा है। इस पर्व को स्वाभिमान पूर्वक मनाते हुए एक दूसरे को बधाई देनी चाहिए तथा हर्षोल्लास के साथ वैदिक यज्ञ करके इस दिन का शुभारम्भ करना चाहिए।

– 'चरित्र निर्माण मण्डल', ग्राम–शाहबाद,
मोहम्मदपुर, नई दिल्ली

HOW TO ESTABLISH AS A GRAHSTHI

There are four ashramas as Brahmcharya, Grahstha, Vanprastha & sanyas in the vedic system of living. Our Vedic philosophers being practical men have already thought over the partitions of our life's time. The above mentioned gradation deals with inner joy.

Life is a journey we already know. How to maintain this journey joyous and happy? This is the question which is to be answered in the light of our Ashram living.

First of all you have to become a man and man means to catch up thinking process to act what the righteousness is , to behave what the betterment is to others is so on and so forth to test your credibility in the society. Certainly, you are a human being which differs from other living ones.

You take birth in a family and you are brought up by your parents adopting certain skills to mould favourable to you at all times when your childhood begins. Their love sympathy, affection wrapped up with aesthetic sense give you turnings to prepare you physically, mentally spiritually and socially. All the impressions you catch in a normal way. You become a part and parcel of your family . In other words you are a member of society. At the age of 25 years you become a good thinker, a good contemplater. You discern the good from the evil. If you do good, you will be esteemed. you understand the etiquette, you understand your responsibilities for your parents, for the neighbours and for the nation. You may become patriot filled with utmost feelings to your country. What a philanthrophic idea you stage up. Really over the age of 21, you are physically and mentally ripened. Under 21 your decisions may mislead you. The changes of your body and brain will tell you all. So at the age of 25 you are perfectly capable for the age to get married and produce children. Female body demands the limit of 16 to 18 years of age on medical ground.

Secondly, it is proper on your part when you are employed or do some business of your own and your Conscience declares you to be a source of independently earnings to maintain your Grahstha Ashram with skillful handlings. Then you are respectable in the society and dexterious to conduct your own family. It means you have learnt lore (vidya) of how to earn and how to spend. You might have undergone the Brahmacharya Ashram first and prepared youself well because of your tactics of knowledge and experience. Only you have to learn how to overcome the sexual urge and let it flow in constructive channels of life . This can be the mental level at the age of maturity that is 25 years.

BY B.R.SHARMA VIBHAKAR

13 अप्रैल पर विशेष

अमृतसर की खूनी बैसाखी से क्षुब्ध हुए अमर शहीदों का बलिदान

- रामबिहारी विश्वकर्मा

अंग्रेज हमारे देश में व्यापारी के रूप में आये और भारत की जनता ने 'अतिथि देवो भव' की परम्परा के अनुसार इन व्यापारियों को सब प्रकार की सुविधाएं दीं। लेकिन धीरे-धीरे इन व्यापारियों ने देश में फूट डालकर उसके टुकड़े-टुकड़े करके अपना कब्जा जमा लिया। 1857 में भारतीय सिपाहियों ने पहली बार विद्रोह करके भारत माँ को विदेशी दासता से मुक्ति दिलाने का प्रयास किया लेकिन वे विफल रहे। महाराष्ट्र में वासुदेव बलवन्त फड़के ने 1873 में युवा समाज का संगठन शुरू किया। जगह-जगह व्यायामशालाएं खोलीं। इस क्रान्तिकारी को राजद्रोह के आरोप में आजीवन कारावास की सजा दी गई लेकिन युवकों ने खासतौर पर गरमपंथी विचारधारा वाले युवकों ने यह निश्चय कर लिया कि इस देश को आजादी भीख मांगने से नहीं मिलेगी। उनका दृढ़ विचार था कि स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है और उसे हम लेकर रहेंगे।

भारत में अंग्रेजों ने तथाकथित शासन सुधार लाने के लिए लार्ड साइमन की अध्यक्षता में एक कमीशन नियुक्त किया था। यह कमीशन 3 फरवरी, 1928 को जब भारत पहुंचा तो पूरे देश में हड़ताल रखी गई। और जगह-जगह ''साईमन गो बैक'' के नारे लगाये गये। लाहौर में नौजवान भारत सभा के सदस्यों ने भी नारे लगाने की योजना बनाई। तत्कालीन पुलिस अधीक्षक स्काट ने असिस्टेंट सान्डर्स को रास्ता साफ करने की जिम्मेदारी सौंपी। लाहौर में लाला लाजपतराय और नौजवानों की टोली पर सान्डर्स ने लाठी बरसायी। लाला लाजपतराय को इतनी चोट लगी कि कुछ दिनों पश्चात् चोट के कारण उनकी मृत्यु हो गई। भगतसिंह ने इस दुखद घटना पर प्रस्ताव रखा कि लाला जी पर जो लाठियां बरसाई गयी हैं। उसी के कारण उनकी मृत्यु हुई है। इससे समूचे राष्ट्र का अपमान हुआ है। और नौजवान भारत सभा इस अपमान का बदला लेकर रहेगी। उन्होंने लाठी चलाने वाले पुलिस सुपरिटेंडेंट स्काट को गोली का निशाना बनाने का निश्चय किया। लाला लाजपतराय की मृत्यु के एक महीने के बाद चन्द्रशेखर आजाद, भगत सिंह, राजगुरू और जयगोपाल ने पुलिस स्टेशन के सामने सान्डर्स को गोलियों से भून डाला। वे मारना तो चाहते थे स्काट को जिसने सान्डर्स को लाठी चार्ज का आदेश दिया था। लेकिन दोनों का आकार-प्रकार ऐसा था कि पहचानने में कुछ भूल हो गई और भ्रमवश उन्होंने सान्डर्स को मार डाला। इस तरह उन्होंने लाला लाजपतराय की मृत्यु का बदला ले लिया। इन जवानों ने भारत माँ की बेड़ियां काटने के लिए अपने पैरों में बेड़ियाँ डाल लीं।

23 वर्ष की उम्र में भगत सिंह एक युगपुरुष बन गये थे। अपने खून से उन्होंने स्वतन्त्रता के जिस पौध कोसींचा वह विशाल वृक्ष बन गया। भगत सिंह को वीरता का यह सबक पुश्तैनी तौर पर प्राप्त हुआ था। एक बार जब वे छोटे थे और छोटे-छोटे तिनके जमीन में गाड़ रहे थे तो उनके पिता सरदार किशन सिंह ने पूछा कि बेटे तुम क्या कर रहे हो तो तुतलाती आवाज में भगत सिंह ने कहा कि बुबुकें बो रहा हूँ। यानि बंदूके बो रहा हूँ। उनका परिवार पिछली दो पीढ़ियों से विदेशी सरकार के खिलाफ संघर्ष कर रहा था। ऐसे परिवार में भगतसिंह जैसे क्रान्तिकारी विचारों वाले बालक का जन्म लेना स्वाभाविक ही था। भगत सिंह 10-11 साल की उम्र में ही बहुत ही चिन्तनशील हो गये थे। वह धर्म के गहन विषयों की आलोचना करने में सक्षम हो गये थे। 1919 में 13 अप्रैल को बैसाखी के दिन अमृसर क जलियांवाला बाग में एक सभा में करीब 20 हजार स्त्री-पुरुष, बच्चे इकट्ठे हुए थे। इसी बीच लैफ्टिनेंट सर ओडायर ने 100 हिन्दुस्तानी और 40 अंग्रेज सिपाहियों के साथ वहां प्रवेश किया। करीब 16 सौ राउण्ड फायर किये गये, जलियांवाला बाग में लाशें पट गईं। उस समय भगतसिंह 12 वर्ष के थे। वह पढ़ने गये थे, लेकिन वह दृश्य देखकर उन्होंने खून से भीगी मिट्टी उठाई और माथे से लगाकर उसे एक छोटी सी शीशी में भर लिया। घर पहुंचने पर अपनी बहन को वह शीशी दिखाई और शीशी के चारों ओर फूल रखकर सिर झुकाया। 14 वर्ष की उम्र में ही उन्होंने पढ़ाई छोड़ दी और स्वतंत्रता के आन्दोलन में कूद पड़े। उनके अन्दर अद्भुत संगठन शक्ति तो थी ही, व्यवहार कुशल भीथे। इसी बीच 5 फरवरी 1922 को गोरखपुर के चौरी चौरा स्थान पर लोगों की भीड़ ने थानेदार और सिपाहियों को थाने में बन्द करके आग लगा दी। क्रान्तिकारियेां के मन में यह निश्चय हो गया कि अंग्रेजों के कान बहरे हो चुके हैं। वे शान्ति की भाषा सुन नहीं पाते। बहरों को सुनाने के लिए ऊची आवाज की जरूरत होती है इसीलिए उन्होंने अंग्रेजों का ध्यान आकर्षित करने के लिए और उनके बहरे कानों में सुनाई देने लायक आवाज बुलन्द करने का निश्चय किया। उन्होंने एसेम्बली में बम फेंकने की योजना बनाई। एसेम्बली में 8 अप्रैल 1929 को वायसराय के फैसले की घोषणा की जाने वाली थी। भगतसिंह और बटूकेश्वर दत्त खाकी कमीज और नेकर पहनकर वहां पहुंच गये। उन्होंने अखबार में लिपटा हुआ बम सरकारी बेंचों के पीछे खाली जगह पर फेंक दिया। उसके बाद दूसरा बम भी फेंका। उन्होंने पिस्तौल से दो गोलियां भी छोड़ी। दोनों वहां खड़े रहे और नारा लगाया इन्कलाब जिन्दाबाद दूसरा नारा गूंजा साम्राज्यवाद का नाश हो। उन्होंने एसेम्बली में पर्चे भी फेंके जिस पर अंग्रेजी में लिखा हुआ था, बहरों को सुनाने के लिए ऊँची आवाज की जरूरत होती है। बम फेंकने के बाद भगत सिंह तथा बटूकेश्वर दत्त आसानी से भाग कर बच सकते थे मगर वे शांत चुपचाप खड़े रहे। पुलिस जब उन्हें कोतवाली ले जाने लगी तो उन्होंने फिर नारा लगाया, 'इन्कलाब जिन्दाबाद' दूसरा नारा गूंजा 'साम्राज्यवाद का नाश हो।' भगत सिंह केवल क्रान्तिकारी ही नहीं थे वे अध्ययनशील और दार्शनिक विचारों वाले व्यक्ति थे। उनसे जब न्यायालय में पूछा गया कि क्रान्ति से आपका आशय क्या है तो उन्होंने कहा, क्राान्ति से हमारा प्रयोजन है अन्याय पर आधारित वर्तमान व्यवस्था में परिवर्तन। उन्होंने आगे कहा, पूंजीपति, शोषक और समाज पर घुन की तरह जीने वाले लोग करोड़ों रुपया पानी की तरह बहाते हैं। वहीं दूसरी ओर शानदार महलों का निर्माण करने वाले लोग गन्दी बस्तियों में रहते हैं ऐसा समाज किस काम का? इसे बदलना होगा। भगत सिंह ने न्यायालय के समझ नई सामाजिक व्यवस्था की जो रूपरेखा दी वह बड़े-बड़े दार्शनिकों को भी सोचने के लिए बाध्य करती है कि इतनी कम उम्र में इस व्यक्ति ने गहन चिन्तन-मनन का समय भला कब निकाला होगा?

असेम्बली में विस्फोट के मूल में उद्देश्य अपने क्रान्तिकारी विचारों को लोगों तक पहुंचाना था। उनके वक्तव्य उस समय के प्रचलित अखबारों में प्रकाशित हुए, उनकी नई विचार पद्धति के साथ जोशीली भाषा और कष्ट झेलने के लिए आगे बढ़ना यह देखकर सारा देश उनके प्रति आकृष्ट हुआ। उन्होंने कहा था कि हम ये जानते हैं कि पिस्तौल और बम इन्कलाब नहीं लाते। इन्कलाब की तलवार विचारों की सान पर तेज होती है, हमने बम का धमाका करके यही प्रकट करना चाहा है। हमारे इन्कलाब का अर्थ पूंजीवाद और पूंजीवादी युद्धों के कष्टों को समाप्त करना है। उन्होंने न्यायाधीश के सामने स्पष्ट किया कि अगर बम फेंकने वालों का सही दिमाग न होता तो वे खाली जगहों की बजाय बेंचों पर बम फेंकते, लेकिन उन्होंने सही जगह चुनने की जो हिम्मत दिखाई है, उसके लिए उन्हें ईनाम मिलना चाहिए। 12 जून 1921 को हुए असेम्बली बम कांड के मुकदमें में भगतसिंह और बटुकेश्वर दत्त को आजीवन कारावास दिया गया। भगत सिंह जेल से ही अपने लक्ष्य को पूरा करने के लिए जनक्रान्ति करते रहे।

लम्बी भूख हड़ताल की। भगतसिंह ने कहा कि हम इस शर्त पर भूख हड़ताल तोड़ेंगे कि हम सबको एक साथ रहने का मौका दिया जाये। जेल अधिकारियों ने उनकी बात मान ली और उन्हें दाल और फुल्का दिया गया। उस समय भी उन्होंने अपनी जिद मनवाई। आजादी के इन दीवानों को देखने के लिए देश भर से लोग पेशी के दिन अदालत में जाते थे और वहां 'वन्देमातरम्' और 'इन्कलाब जिन्दाबाद' के नारों से आसमान गूंज उठता था।

लाहौर जेल में ही बटुकेश्वर दत्त, अजय घोष, जितेन्द्र सान्याल, यतीन्द्र नाथ दास भी रखे गये थे। इसी बीच सान्डर्स हत्याकाण्ड का मुकदमा भी 10 जुलाई 1929 से शुरू हुआ। भगत सिंह को हथकड़ी लगाने की जब बात हुई तो उन्होंने कहा कि एक क्रान्तिकारी को पुलिस के सिपाही के साथ हाथ बांध कर ले जाया जाये ये न्याय के खिलाफ है और उन्होंने भूख हड़ताल कर दी। न्यायाधीश जब कुर्सी पर बैठते थे तो चारों ओर नारे और राष्ट्रीय गीत गूंजने लगता था, ''सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है। देखना है जोर कितना बाजुए कातिल में है। वक्त आने पर बता देंगे तुझे ऐ आसमां। हम अभी से क्या बताएं क्या हमारे दिल में है''।

जिस समय मृत्यु की भयानक काली छाया मंडरा रही थी, उस समय भी आजादी के इन दीवानों की हंसी और अट्हास गूंजता रहता था। भगत सिंह कई बार ऐसा व्यंग्य छेड़ते थे या कोई ऐसा पेंचीदा सवाल उठा देते थे कि मजिस्ट्रेट भी चकरा जाते थे। मुकदमें की कार्यवाही 3 महीने तक चलती रही और दुनिया भर के मुकदमों के इतिहास में शायद लाहौर षड्यन्त्र केस ही ऐसा है जिसमें फैसला उस दिन सुनाया गया जिस दिन न अभियुक्त अदालत में हाजिर थे, न गवाह और न वकील। अदालत ने खुद आरोप लगाया और खुद ही फैसला दिया। फैसले में भगतसिंह, राजगुरू और सुखदेव को फांसी की सजा सुनाई गई, 7 को कालेपानी की सजा, एक को सात वर्ष की सजा और एक को तीन वर्ष की सजा दी गई। भगत सिंह को मृत्यु से तनिक भी भय न था, उन्हें न तो व्यक्तिगत चिन्ता थी और न कोई दुःख था।

भगत सिंह जेल में अध्ययन करते रहते थे। हर पत्र में वे पुस्तकों को ही मांग करते थे। पुस्तकों के साथ-साथ वह यहां तक लिख देते थे, कि पुस्तकालय के रजिस्टर में उस पुस्तक का कितना नम्बर है। उन्होंने चार्ल्स डिकेन्स, रीड मेम्सबेनी, गोर्की, मार्क्स, उमर खैयाम, आस्कर वाइल्ड, जार्ज बनार्ड शा और लेनिन आदि का गहन अध्ययन किया था। जब वे अपनी कोठरी में इधर से उधर घूमते थे तो कभी-कभी पुस्तकें छोड़कर मधुर स्वर में गा उठते थे, ''माँ मेरा रंग दे बसन्ती चोला। इसी रंग में रंग के शिवा ने माँ का बंधन खोला।'' उन्हें राष्ट्र और राष्ट्रवासियों की इतनी चिन्ता थी कि उसके सामने अपने कष्टों का कुछ ध्यान ही नहीं था, जेल में ही उन्होंने 'आत्मकथा', मौत के दरवाजे पर, समाजवाद का आदर्श और स्वाधीनता की लड़ाई में पंजाब का पहला उभार जैसी पुस्तकें लिखीं। कुछ पुस्तकें तो छप गईं लेकिन कुछ नहीं छप पाई। जेल में जब कोई मिलने आता था तो कभी-कभी वह कहते थे अगर मैं इन्कलाब जिन्दाबाद का नारा देश के कोने-कोने तक पहुंचा सका तो समझूंगा कि मेरे जीवन का मूल्य मिल गया। उन्होंने जेल से युवकों के नाम सन्देश भेजा था जिसमें अपनी राजनीतिक विचारधारा को स्पष्ट किया था। उन्होंने अपने बारे में कहा था, यह बात प्रसिद्ध की गई है कि मैं आतंकवादी हूँ परन्तु मैं आतंकवादी नहीं हूँ, मैं एक क्रान्तिकारी हूँ जिसके कुछ निश्चित विचार-आदर्श और लम्बा कार्यक्रम है। मेरा दृढ़ विश्वास है कि हम बम और पिस्तौल से कोई लाभ प्राप्त नहीं कर सकते। हमारा मुख्य लक्ष्य यह है कि मजदूरों और किसानों का संगठन हो।'' भगतसिंह के बलिदान का क्षण ज्यों-ज्यों नजदीक आ रहा था, वह प्रसन्नता और उत्सुकता के साथ उस क्षण की प्रतीक्षा कर रहे थे। अपने छोटे भाई कुलतार सिंह को लिखे पत्र में उन्होंने कहा था- ''फिर जन्म लूँ और मातृभूमि की और सेवा कर सकूँ'' मृत्यु के प्रति उनकी निर्भीकता को देखकर लगता था कि जैसे वह इन्सान नहीं फरिश्ता है। जब उनसे कहा गया कि आखिरी वक्त अपने वाहे गुरु का नाम ले लो और 'गुरुवाणी' का पाठ कर लो तो भगतसिंह ने कहा, ''आखिरी वक्त आ गया है, मैं परमात्मा को याद करूँ तो वह कहेंगे कि यह बुजदिल है, तमाम उम्र तो इसने मुझे याद नहीं किया और मौत सामने नजर आने लगी है तो मुझे याद करने लगा है। लोग यही कहेंगे कि आखिरी वक्त मौत को सामने देखकर इसके पांव लड़खड़ाने लगे।'' जब फांसी की सजा दी गई तो भगतसिंह बीच में थे, अगल-बगल सुखदेव और राजगुरु थे। तीनों मिलकर साथ-साथ गाते हुए चलने लगे, दिल से निकलेगी ना मर कर भी वतन की उल्फत, मेरी मिट्टी से भी खुशबुए वतन आयेगी।

भगत सिंह ने मजिस्ट्रेट को देखकर कहा था 'आप बहुत भाग्यशाली हैं कि आपको यह देखने को नसीब हो रहा है कि भारत के क्रान्तिकारी किस तरह खुशी-खुशी अपने उच्च आदर्शों के लिए मौत को गले लगाते हैं।' उनके पैरों पर न कंपकंपी थी, न चेहरे पर घबराहट। फांसी की फंदा पकड़कर उसे चूम कर तीनों ने एक साथ गर्जना की, ''इन्कलाब जिन्दाबाद'' साम्राज्यवाद मुर्दाबाद। उस समय शाम के सात बजकर 30 मिनट थे। इन तीनों क्रान्तिकारियों को समूचा देश उनकी निर्भीकता और राष्ट्रवाद की अदम्य भावना के लिए सदैव याद रखेगा।

(पूर्व निदेशक, आकाशवाणी केन्द्र, नई दिल्ली)

आर्य केन्द्रीय सभा गाजियाबाद के तत्वावधान में चैत्र शुक्ल प्रतिप्रदा विक्रम सम्वत् 2081, आर्य समाज स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में 9 अप्रैल, 2024 को सायं 4 से 7.30 बजे तक भारतीय नव–सम्वत्सर एवं आर्य समाज स्थापना दिवस भव्यता के साथ हुआ सम्पन्न

समारोह की अध्यक्षता वयोवृद्ध आर्यनेता श्री श्रद्धानन्द शर्मा ने की

मुख्य वक्ता सार्वदेशिक सभा के नेता स्वामी आर्यवेश जी रहे

युवा वैदिक विद्वान् आचार्य संजय याज्ञिक का प्रभावशाली प्रवचन हुआ

आर्य केन्द्रीय सभा गाजियाबाद के तत्वावधान में 9 अप्रैल, 2024 को सायं 4 से 7.30 बजे तक श्री शम्भू दयाल संन्यास आश्रम गाजियाबाद में भारतीय नव–सम्वत्सर एवं आर्य समाज स्थापना दिवस समारोह बड़े उत्साह के साथ मनाया गया। इस समारोह में यशस्वी आर्य संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी के अतिरिक्त वयोवृद्ध श्री श्रद्धानन्द शर्मा, युवा वैदिक विद्वान् श्री संजय याज्ञिक, मुंशी नरेन्द्र बंसल, प्रधन जिला सभा गाजियाबाद, अतिविशिष्ट अतिथि आर. डी. स्टील के मालिक श्री सुभाष गर्ग, विशिष्ट अतिथि श्री कृष्ण शास्त्री कोषाध्यक्ष जिलासभा गाजियाबाद, एवं युवा भजनोपदेशक श्री अजय आर्य आदि ने अपने विचार प्रस्तुत किये।

इस अवसर पर अपने प्रवचन के माध्यम से आचार्य संजय याज्ञिक ने अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि हमें अपने जीवन में मूल से जुड़े रहना चाहिए अर्थात् आदि सृष्टि से चली आ रही वैदिक संस्कृति ही हमारा मूल है और उससे जुड़े रहने से ही मानव समाज विकसित हो सकता है। प्रतिवर्ष सृष्टि उत्पत्ति या आर्य समाज स्थापना के उपलक्ष्य में मनाये जाने वाले इस पर्व पर हमें अपना आत्मावलोचन करना चाहिए और जीवन में किसी भी प्रकार की शिथिलता, आलस्य एवं निष्क्रियता यदि हो तो उसे दूर करके नई ऊर्जा एवं उत्साह के साथ कार्य प्रारम्भ करना चाहिए।

सार्वदेशिक सभा के नेता स्वामी आर्यवेश जी ने चैत्र प्रतिप्रदा से शुरू होने वाले नववर्ष को मनाने की प्रेरणा देते हुए संकल्प दिलवाया कि हम जनवरी के प्रथम दिन को नये वर्ष का शुभारम्भ मानने की बजाय चैत्र प्रतिप्रथा को ही नये वर्ष का शुभारम्भ मानेंगे। इसी प्रकार जन्मदिवस मनाते समय केक काटना व मोमबत्ती बुझाना एक तर्कहीन परम्परा है, इसे छोड़कर यज्ञ के द्वारा जन्मदिन का कार्यक्रम मनाया जाना चाहिए।

श्री कृष्ण शास्त्री जी ने नववर्ष की महिमा पर प्रकाश डालते हुए कहा कि यह नववर्ष सभी का है, पूरी मानवजाति का है। इसे केवल हिन्दुओं तक सीमित रखना उचित नहीं।

श्री श्रद्धानन्द शर्मा जी ने आर्यों का आह्वान किया कि अब समय आ गया है जब हम सभी को ठोस कार्य योजना बनाकर कार्य करना होगा। जिस प्रकार की निष्क्रियता आर्य समाज में दिखाई देती है, यह आत्मघाती है।

श्री अजय आर्य के भी ओजस्वी गीतों का कार्यक्रम रहा। इस आयोजन में संन्यास आश्रम के उपाध्यक्ष एवं व्यवस्थापक स्वामी सूर्यवेश जी, श्री सत्यकेतु सिंह एडवोकेट, श्री वेदव्यास, श्री प्रवीण आर्य (मीडिया प्रभारी) एवं आर्य केन्द्रीय सभा, गाजियाबाद के प्रधान श्री सत्यवीर चौधरी, मंत्री श्री नरेन्द्र कुमार पांचाल, कोषाध्यक्ष श्री गौरव सिंह आर्य आदि का विशेष योगदान रहा। मंच का कुशल संयोजन श्री सत्यवीर चौधरी ने किया। कार्यक्रम के उपरान्त भोजन आदि की भी समुचित व्यवस्था की गई थी।

छपते–छपते

आर्य जगत् की अपूर्णीय क्षति

प्रसिद्ध वरिष्ठ आर्य नेता, आर्य समाज नागौरी गेट हिसार के प्रधान, हरियाणा सरकार के पूर्व मंत्री चौ. हरि सिंह सैनी जी का आकस्मिक निधन सम्पूर्ण आर्य जगत में शोक की लहर।

पृष्ठ 1 का शेष

28वां जन–चेतना महायज्ञ मंगलवार 9 अप्रैल, 2024 को महाराणा प्रताप प्रांगण (जीमखाना मैदान) मेरठ में हुआ भव्यता के साथ सम्पन्न

इस अवसर पर मेरठ के सांसद श्री राजेन्द्र कुमार अग्रवाल, रामायण में राम की भूमिका करने वाले श्री अरुण गोविल एवं अन्य अनेक गणमान्य लोगों ने भी सम्मिलित होकर आहुतियां प्रदान की और अपने राष्ट्र की समृद्धि एवं गौरव की कामना की।

इस विशाल आयोजन के संयोजक कर्मठ एवं समर्पित आर्य नेता श्री राजेश सेठी ने बड़ी कुशलता के साथ मंच का संचालन किया तथा आचार्य वाचस्पति की देख–रेख में गुरुकुल प्रभात आश्रम के सभी ब्रह्मचारियों ने यज्ञ की व्यवस्था में सक्रिय भूमिका निभाई। पिछले 27 साल से जन–चेतना महायज्ञ का यह कार्यक्रम प्रतिवर्ष समारोह पूर्वक आयोजित किया जाता है जिसमें हजारों लोग सम्मिलित होकर आहुतियां देते हैं और नये संकल्प लेते हैं। कार्यक्रम अत्यन्त उत्साह के साथ सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम के उपरान्त प्रसाद एवं भोजन की व्यवस्था आर्य समाज थापरनगर में की गई थी।

को जागरूक होकर कार्य करना चाहिए। मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीरामचन्द्र एवं योगेश्वर श्रीकृष्णचन्द्र जी वैदिक संस्कृति के दो प्रकाश पुंज हैं। उनके जीवन से हमें प्रेरणा लेनी चाहिए तथा वैदिक सनातन संस्कृति की सुरक्षा एवं संवर्द्धन के लिए अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर एक अभियान प्रारम्भ करना चाहिए। यह दिन हमें अपने जीवन एवं अपने समाज का मूल्यांकन करने का दिन है। समाज में आई विभिन्न कुरीतियों एवं जीवन में आई हुई शिथिलताओं को चिन्हित करके हमें नये उत्साह एवं ऊर्जा के साथ कार्य प्रारम्भ करना चाहिए। ऐसा करके ही हम नव–वर्ष के इस समारोह एवं आयोजन को सार्थक बना सकते हैं। स्वामी आर्यवेश जी ने यज्ञ के महत्त्व पर भी प्रकाश डाला और कहा कि यज्ञ एक जरामरीय सत्र है। यज्ञ के द्वारा मनुष्य त्याग, समर्पण, परोपकार एवं इदन्न मम् का भाव अपनाने का अभ्यास करता है। जब तक वे गुण हमारे जीवन में नहीं आ जाते जब तक हमें निरन्तर यज्ञ करते रहना चाहिए। अतः यज्ञ को हम अपने जीवन से जोड़कर चलें और त्याग की प्रेरणा प्राप्त करें। यज्ञ केवल एक वायु प्रदूषण प्राप्त करने की प्रक्रिया नहीं है बल्कि इससे हम जीवन जीने की कला भी सीख सकते हैं। स्वामी आर्यवेश जी के उद्‌बोधन के बाद विधिवत रूप से यज्ञ संचालित हुआ।

वैदिक विद्वान आचार्य चंद्रशेखर शास्त्री जी आर्य रत्न सम्मान से सम्मानित

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जन्म जयंती के अवसर पर आर्य समाज उत्तम नगर क्षेत्र, नई दिल्ली के तत्वावधान में आयोजित समारोह में अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त वैदिक विद्वान् एवं 'अध्यात्म पथ' के सम्पादक आचार्य चंद्रशेखर शास्त्री जी को शॉल, प्रशस्ति पत्र, स्मृति चिह्न एवं सम्मान राशि प्रदान कर आर्य रत्न सम्मान से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर समाज के मंत्री श्री अमर सिंह सहरावत जी ने समारोह को संबोधित करते हुए कहा कि आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी मूर्धन्य वक्ता, प्रख्यात लेखक, कर्मयोगी, परोपकारी एवं अत्यंत उत्साही वैदिक विद्वान् हैं। उन्हें हम सम्मानित करते हुए अपने आपको गौरवान्वित अनुभव कर रहे हैं।

कार्यक्रम में श्री यशपाल आर्य (पूर्व पार्षद), डॉ अनिल आर्य (अध्यक्ष, केंद्रीय आर्य युवक परिषद), डॉ. भारद्वाज पांडे (वैदिक विद्वान्), आचार्य श्री संजीव रूप (वैदिक विद्वान्), श्री सेवक जगवानी (योगाचार्य) आदि गणमान्य महानुभाव बड़ी संख्या में उपस्थित थे। इस शुभ अवसर पर महर्षि दयानन्द जी द्वारा लिखित एवं आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी द्वारा संपादित 'व्यवहारभानु' (सद व्यवहार के स्वर्णिम सूत्र) नामक पुस्तक का निःशुल्क वितरण किया गया। आर्य समाज के प्रधान श्री राजकुमार भाटिया जी, कोषाध्यक्ष श्री कृष्ण कुमार गर्ग जी ने सभी का आभार प्रकट किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन समाज के मंत्री श्री अमर सिंह सहरावत जी ने किया। कार्यक्रम के अंत में ऋषि लंगर का आयोजन किया गया।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के निर्देशन में
महर्षि दयानन्द धाम, अमृतसर (पंजाब) की ओर से महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जन्म जयन्ती के उपलक्ष्य में विशाल समारोह का भव्य कार्यक्रम हुआ सम्पन्न

नशाबन्दी की राष्ट्रीय नीति घोषित हो – स्वामी आर्यवेश

पंजाब में आर्य समाज के संगठन को मजबूत किया जायेगा – अश्विनी शर्मा एडवोकेट
पाखण्ड एवं अन्धविश्वास से भारत अन्धकार की ओर जा रहा है – ओम प्रकाश आर्य
स्वतंत्रता आन्दोलन में आर्य समाज की ऐतिहासिक भूमिका रही – स्वामी आदित्यवेश
युवा पीढ़ी को आर्य समाज से जोड़ने की ठोस योजना बनाई जाये –डॉ. नवीन आर्य

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के निर्देशन में महर्षि दयानन्द धाम, अमृतत्सर के तवत्वावधान में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जन्म जयंती के उपलक्ष्य में दिनांक 7 अप्रैल, 2024 को गुरुनानक आडिटोरियम, अमृतसर में विशाल स्तर मनाया गया। इस विशाल समारोह की अध्यक्षता सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नेता स्वामी आर्यवेश जी ने की। कार्यक्रम का शुभारम्भ यज्ञ से किया गया। यज्ञ का संचालन आचार्य दयानन्द शास्त्री, श्री सिकन्दर शास्त्री व श्री मुकेश शास्त्री द्वारा सम्पन्न कराया।

यज्ञ के उपरान्त 11 बजे से मुख्य मंच से कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। सर्वप्रथम अमृतसर के पुरोहित वर्ग ने आचार्य दयानन्द शास्त्री के नेतृत्व में ईश्वर स्तुति प्रार्थना उपासना मंत्रों का पाठ किया, तत्पश्चात् दीप प्रज्जवलन से कार्यक्रम का शुभारम्भ हुआ। दीप प्रज्जवलित करने के लिए वरिष्ठ महिलानेत्री नियुक्त की गई थीं जिनमें प्रिं. स्वराज ग्रोवर अमृतसर, श्रीमती सविता दिलावरी, श्रीमती मधुर भाषिणी मेहता, श्रीमती संन्ध्या चावला, श्रीमती कंचन दुग्गल, श्रीमती सुदर्शन ठुकराल, श्रीमती राजरानी आर्या, श्रीमती सीमा चौहान, श्रीमती अंजलि कपूर, प्रिं. मीनू मेहता आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

कार्यक्रम का शुभारम्भ करते हुए डॉ. अंजू आर्या व श्रीमती सुलोचना आर्या के संयोजन में प्रसिद्ध भजन गायक सरदार सुरिन्दर सिंह गुलशन जालंधर, डी.ए.वी. स्कूल हाथी गेट के विद्यार्थियों, आत्म पब्लिक स्कूल की छात्राओं एवं दयानन्द मॉडल स्कूल के विद्यार्थियों ने ऋषिवर दयानन्द जी के जीवन एवं कार्यों पर भजन गाकर सभी को मन्त्रमुग्ध कर दिया।

इस महासम्मेलन में सार्वदेशिक सभा के नेता स्वामी आर्यवेश जी के अतिरिक्त युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री अश्विनी कुमार शर्मा एडवोकेट के अतिरिक्त मुख्यअतिथि के रूप में सभा के वरिष्ठ उपप्रधान श्री अरविन्द मेहता, सभा के उपप्रधान श्री सुलक्षण सरीन एडवोकेट नवाशहर, प्रसिद्ध उद्योगपति श्री जनकराज दुग्गल, श्री अवनीश चौहान चण्डीगढ़, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के मंत्री श्री देवपाल आर्य लुधियाना, श्री विजय सराफ प्रधान गोल्ड एण्ड सिल्वर एसोसिएशन अमृतसर आदि कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में पधारे। विशेष आमंत्रित महानुभावों में श्री इन्द्रपाल आर्य प्रधान आर्य समाज लक्ष्मणसर, श्री स्वतंत्र कुमार मंत्री आर्य समाज जंडियाला, श्री राजेश कपूर अमृतसर, श्री शिव कुमार धीर लुधियाना, श्री हीरालाल दुग्गल अमृतसर, श्री भास्कर आर्य प्रधान आर्य समाज सैक्टर–11 पंचकूला, श्री योगिन्दर कृष्णा प्रधान आर्य समाज सैक्टर–20, पंचकूला, श्री विद्याव्रत पंचकूला, श्री तरसेम लाल आर्य मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, श्री अशोक आर्य चण्डीगढ़, श्री राकेश काठिया एडवोकेट प्रधान आर्य समाज रमदास, श्री राज कुमार प्रधान पतंजलि योग समिति अमृतसर, श्री राजेश आहूजा अमृतसर, श्री सतपाल सूरी बंगा, श्री परमिन्दर सिंह एडवोकेट जालंधर, श्री जवाहर लाल मेहरा प्रधान आर्य समाज मॉडल टाऊन, श्री विजय ठुकराल मॉडल टाऊन, श्री देशबन्धु धीमान मॉडल टाऊन, कर्नल वेद मित्र मॉडल टाऊन, श्री दीपक महाजन आर्य समाज शक्तिनगर, श्री प्रवीण पसाहन आर्य समाज लक्ष्मणसर, श्रीमती सुनीता अरोड़ा स्त्री आर्य समाज प्रेमनगर, श्री बालकृष्ण शर्मा चेयरमैन नशा विरोधी समाज निर्माण संगठन, श्री सुधीर एवं छवि गुप्ता, श्री जुगल महाजन आम आदमी पार्टी पंजाब, निधि, हिमांशु मेहरा आदि विशेष रूप से कार्यक्रम में सम्मिलित रहे।

इस सम्पूर्ण कार्यक्रम के मुख्य संयोजक श्री ओम प्रकाश आर्य एवं जवाहर लाल मेहरा तथा मंच संचालक पंजाब प्रान्तीय आर्य युवक परिषद् के अध्यक्ष डॉ. नवीन आर्य रहे। श्री तरसेम लाल आर्य बरनाला, श्री अशोक आर्य पंचकुला, श्री राकेश काठिया एडवोकेट रमदास, श्री बालकृष्ण शर्मा एडवोकेट नवाकोट एवं श्री राजकुमार योगाचार्य संयोजक मण्डल के सदस्य थे। इस कार्यक्रम की व्यवस्था में जिन कर्मठ कार्यकर्ताओं ने अथक परिश्रम किया उनमें श्री अशोक कुमार वर्मा, श्री अर्जुन कुमार, श्री राज कुमार, श्री पंकज वर्मा, श्री गौरव आर्य, श्री नरेश पसाहन, श्री मुकेश पसाहन, श्रीमती वन्दना, श्रीमती सुनीता, श्रीमती नीलम, श्रीमती राकेश आर्या, श्री यशपाल गुप्ता श्री कुणाल आर्य, श्रीमती खुशी आर्या, श्रीमती मीना, श्री सुनील, श्री आर्यमन व आर्यन, श्री अरुण पसाहन, श्री मोंटू, अनिकेत, श्रीमती कमलेश रानी, श्री अरुण बजाज, श्री प्रवीण आर्य, श्री ऋषि आर्य, श्री हिमांशु मेहरा आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। आचार्य दयानन्द शास्त्री, श्री सिकन्दर शास्त्री, श्री मुकेश शास्त्री, श्री पवन त्रिपाठी, श्री संतोष शास्त्री, श्री तेजनारायण शास्त्री, श्री गंगाधर शास्त्री, श्री सोमदेव शास्त्री

शेष पृष्ठ 6 पर

गाय का महत्व

— डॉ0 पुष्पा देवी

अनादिकाल से ही दूध देने वाले चौपायों में गाय का महत्व सर्वोपरि है और रहेगा। केवल भारत या भारतीय संस्कृति में ही नहीं वरन् भारत के अलावा अन्य सभी धर्म एवं संस्कृति में गाय का विशेष महत्व है। एक व्यक्ति से लेकर पूरे राष्ट्र एवं विश्व को पुष्ट कर हित प्रदान करने में समर्थ-गाय है। पूरी कौम की रग-रग में गाय का खून दौड़ रहा है। इसलिए भारतीय इसे गौ माता कहते हैं। माता जैसी परम पवित्र उपाधि केवल गाय को ही प्राप्त है।

गाय के सम्बन्ध में इस्लाम का दृष्टिकोण सदा से ही श्रद्धास्पद व उदार रहा है। कुरान शरीफ में स्पष्ट लिखा है कि ''बिना शक तुम्हारे लिए चौपायों से भी सीख है। उनके (गाय के) पेट की चीजों में से गोबर और खून के बीच से बना साफ दूध जो पीने वालों के लिए स्वाद वाला है, हम तुम्हें पिलाते हैं।''

हजरत मुहम्मद साहब ने हजरत आयशा से कहा, ''गाय का दूध खूबसूरती और तन्दुरुस्ती बढ़ाने का बहुत बड़ा नुस्खा है।''

तफसीर दुर्रे-मन्सूर में कहा गया है कि ''गाय की बुजुर्गी का एहतराम किया करो क्योंकि वह तमाम चौपायों की सरदार है, तुम्हें दूध देती है।

गाय दौलत की रानी है। अच्छी तरह पाली हुई 9 गायें 16 वर्षों में न सिर्फ 450 गायें पैदा करती हैं बल्कि उनसे हजारों रुपये का दूध और फसल के लिए गोबर की अच्छी खाद भी मिलती है।

मुसलमानों को गो हत्या नहीं करना चाहिए। इमाम जाफर सादिक के कथनानुसार 'गाय का दूध हवा है, इसके मक्खन में शिफा (बन्दुरुस्ती) है और मांस में बीमारी। स्वर्गीय हकीम अजमेल खाँ के शब्दो में, ''न ही कुरआन शरीफ और न ही अरब की प्रथा ही गाय की कुर्बानी की इजाजत देती है। मौलाना फारुकी द्वारा लिखित-'खैर व बरकत' में लिखा है, ''मक्का में 'गोकशी' पर पाबन्दी लगायी थी''। बाबर, हुमायुँ, अकबर, जहांगीर, मुहम्मद शाह आलम, शाहजहाँ, औरंगजेब आदि बादशाहों तथा अब्दुल मलिक, इब्ने-मखान दूबेदार ईराकवाली हुकूमत अफगानिस्तान ने भी गाय की कुर्बानी पर पाबन्दी लगायी थी।

सौ से अधिक उलेमाए अहले सुन्नत (धर्माचार्यो) ने भी इसके पक्ष में फतवा दिया था कि (हदीस में कहा गया है) ''गौ के हत्यारे को कभी माफ नहीं किया जाना चाहिए। इस फतवे पर मुहम्मद शाह, गाजीशाह, शाह आलम बादशाह, सैय्यद अताउल्ला खाँ, पीर मौलवी कुतुबुद्दीन, काजी मितां, असगर हुसैन वल्द मुंशी इलाही खाँ, दरोगा आतिश खाँ, हुजूर पुरनूर आदि पाँचों बुजुर्गो के दस्तखत थे।

ब्रिटिश शासनकाल में अनेक स्वतन्त्र रियासती शासकों, नवाबों ने अपने-अपने अधिकार क्षेत्रों में गौ हत्या बन्द करवाई थी। जिनमें उल्लेखनीय हैं- नवाब रामपुर, नवाब मंग्लोर, नवाब दुजाना (करनाल), नवाब गुड़गाँव, नवाब मुर्शिदाबाद। भारत में गोबध का प्रश्न दुर्भाग्य से हिन्दुओं एवं मुसलमानों में मतभेद का कारण बना हुआ है। इस प्रश्न का हल खोजना आवश्यक है। जब हम इसके लिए मुसलमानों के कुरबानी के इतिहास को देखते हैं तो हमें ज्ञात होता है कि यह प्रथा मुसलमानों ने हजरत इब्राहिम से ली है। हजरत इब्राहिम को ईश्वर की ओर से आदेश हुआ कि वह अपने प्यारे बेटे इस्माईल को खुदा की राह में कुरबान करें। इब्राहिम ने खुदा की खुशी के लिये अपने बेटे इस्माइल की कुरबानी करनी चाही। जब उन्होंने अपनी आखों में पट्टी बांधकर इस्माइल को जिबह (कुर्बानी) करना चाहा तो इस्माइल सुरक्षित बच गये और उनकी जगह दुम्बा (भेड़) ज़िबह हो गया।

इस्लाम धर्म की जन्मभूमि 'अरब' में हर साल असंख्य मुसलमान हज़ को जाते हैं। वहां भी दुम्बे की कुर्बानी होती है। क्या अरब में जाकर कोई हाजी गाय की कुर्बानी करता है?(हज़ के दौरान तो मक्खी,

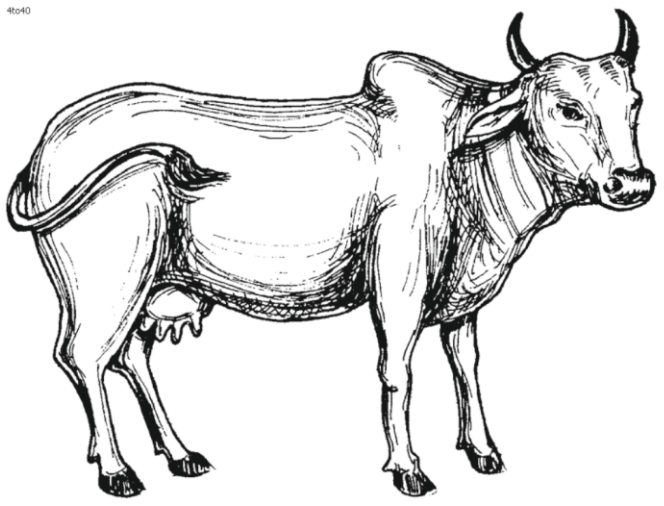

मच्छर, खटमल, जूँ तक मारना निषेध है अतः यह संदिग्ध है कि हज के दौरान वहाँ दुम्बे की बलि दी जाती है। -सम्पादक)

स्वामी निगमानन्द पतंजलि के अनुसार, अगर वहाँ ऐसा नहीं किया तो क्या इस प्रकार उन्होंने किसी धार्मिक आदेश का उल्लंघन किया?अखिल भारतीय मुस्लिम सम्मेलन (1928-29) दिल्ली में स्वर्गीय आगा खान ने अपने भाषण में कहा था कि, 'कुरान शरीफ में ही तो अल्लाह ने हमें यह भी हिदायत दी कि मत जानवारों को मारना, मत फसलों को उजाड़ना इससे संसार में बुराइयाँ फैलती हैं, अल्लाह-तआला किसी भी प्रकार की बुराई पसन्द नहीं करता। (सूरए-बकर) अर्थात् कोई भी मजहब किसी भी प्रकार की कोई बुराई पसन्द नहीं करता। भाईचारा, मेल-मुहब्बत सब चाहते हैं।

लखनऊ के प्रसिद्ध शायर पंडित बृजानारायण 'चकबस्त' ने गाय माता के विषय में अपने विचार इस तरह व्यक्त किया था-

''तू वो मखलूक है आलम में नहीं जिसका गुनाह
ली है कांलिब में तेरे रूहें - मुहब्बत ने पनाह !
साहबे-दिल, खुदा, मर्दे-खुदा कहते हैं।
दर्दमन्दों की मसीहा शुअरा कहते हैं।
'माँ' तुझे कहते हैं हिन्दू तो बजा कहते हैं।
कौन है जिसने तेरे दूध से मुँह फेरा है
आज इस कौम की रग रग में लहू तेरा है।''

भारत में हिन्दुओं का बहुमत होने के बावजूद भी गोहत्या की गति में वृद्धि जिस तीव्र गति से हो रही है उसका पता भारत सरकार के लेखपत्रों में दिये आकड़ों से चलता है। हमारे देश में प्रति मिनट लगभग 28 गायें कत्ल हो जाती हैं यानी कैलेण्डर का एक पृष्ठ पलटते-पलटते 40 हजार गायें मौत के घाट उतारी जा चुकी होती हैं। एक आकड़ें के अनुसार सन् 1981 ई0 में 30, 806 टन मांस का निर्यात भारत से हुआ था। किन्तु आज अकेले गोमांस का ही निर्यात 15, 112 टन के करीब पहुँच गया है। इस मांस में बकरी के मांस का वजन शामिल नहीं है। लगभग 18 यान्त्रिक बूचड़खाने चौबीसों घंटे धड़ल्ले से चल रहे हैं। निर्बाध रुप से चलने वाले बूचड़खानों की संख्या इसमें सम्मिलित कर ली जाय तो यह संख्या 36, 050 तक हो जाती है। सेन्ट्रल सेक्टर योजना के अनुसार नगरपालिकाओं, महापालिकाओं और अन्य अर्धस्वायत्त संस्थानों के कत्लखानों को संचालित करने हेतु शत-प्रतिशत अनुदान दिये जा रहे हैं। 'फारेन ट्रेड' नामक बुलेटिन के फरवरी 1994 ई0 में ऐसी जानकारी दी गयी थी कि इन कत्लखानों के माध्यम से भारत प्रतिवर्ष 230 करोड़ रुपयों का मांस निर्यात कर रहा है। सदी के अंत तक एक हजार करोड़ रुपये के वार्षिक निर्यात का लक्ष्य है।

यही नहीं, भारत सरकार की प्रतिवर्ष पैंतीस लाख टन गो-मांस निर्यात करने की योजना है। यदि ये योजनाएँ सफल हो गयीं तो गो-मांस के निर्यात में भारत सबसे बड़ा मांस निर्यातक बन जाएगा, जो शर्म की बात है क्योंकि भारत को गायों और गोपालकों का देश कहा जाता है।

जिस देश की अर्थव्यवस्था पशु-पालन पर निर्भर है और जिसके संविधान और धर्म में गोरक्षण की जिम्मेदारी मुख्यतः सरकार पर निर्भर है, उस देश में गो-हत्या की स्थिति यदि यही बनी रही तो आने वाले दिनों में शीघ्र ही गाय को 'दुर्लभ प्राणी' घोषित कर दिया जाय तो कोई आश्चर्य की बात न होगी।

वरिष्ठ प्रवक्ता, शिक्षाशास्त्र विभाग,
सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी
मो.: 09415619837, 9335852901

पृष्ठ 5 का शेष

महर्षि दयानन्द धाम, अमृतसर (पंजाब) की ओर से महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की.....

आदि पुरोहितगण का नैतिक सहयोग समारोह में प्राप्त हुआ। आयोजन की सम्पूर्ण व्यवस्था में आचार्य दयानन्द शास्त्री, डॉ. नवीन आर्य, श्रीमती सुलोचना आर्या, श्री छवि आर्या आदि की विशेष भूमिका रही।

अध्यक्षीय उद्बोधन देते हुए सार्वदेशिक सभा के नेता स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि आर्य समाज राष्ट्र के लिए सर्वात्मना समर्पित क्रांतिकारी संगठन है। आर्य समाज मनुष्यों के साथ–साथ समस्त जीव–जन्तुओं के उपकार एवं कल्याण की भावना से कार्य करता है और अपने स्थापना काल से कार्य करते हुए अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दे रहा है। यह वर्ष स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के जन्म का 200वां वर्ष है जिसे देश ही नहीं अपितु विदेशों में भी बड़े ही उत्साहपूर्ण वातावरण में मनाया जा रहा है। इस अवसर पर हम केंद्र सरकार से मांग करते हैं कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की स्मृति में देश की राजधानी दिल्ली में अंतर्राष्ट्रीय स्मारक संग्रहालय बनाया जाये जिसमें स्वतंत्रता आन्दोलन एवं राष्ट्र के नव–निर्माण में महर्षि दयानन्द तथा आर्य समाज की भूमिका से सम्बन्धित तथ्यपूर्ण सामग्री उपलब्ध की जाये ताकि पूरी दुनिया से आने वाले पर्यटक एवं अन्य लोग महर्षि के कृतित्व एवं व्यक्तित्व से परिचित हों तथा प्रेरणा ले सकें। स्वामी आर्यवेश जी ने यह भी मांग की कि भारत की संसद में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का चित्र लगाया जाये और उन्होंने कहा कि नशाबन्दी के लिए राष्ट्रीय नीति घोषित की जाये।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री अश्विनी कुमार शर्मा एडवोकेट ने अपने विचार रखते हुए कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी द्वारा किये जा रहे कार्यों को आगे बढ़ाना हम सभी का कर्त्तव्य है। हम इस कार्य को आगे बढ़ाने में प्राण–पण से कार्य कर रहे हैं और आगे भी महर्षि के विचारों को जन–जन तक पहुँचाने के लिए कृतसंकल्पित रहेंगे। उन्होंने पंजाब में आर्य समाज के संगठन को मजबूत करने का आह्वान किया।

इस विशाल समारोह के संचालक श्री ओम प्रकाश आर्य महामंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीरामचन्द्र एवं योगीराज श्रीकृष्णचन्द्र को वैदिक संस्कृति का प्रकाश पुंज बताया है। वे चाहते थे कि समाज में वैदिक संस्कृति का बोलबाला हो और पूरा समाज वैदिक संस्कृति के मूल्यों को अपनाये। उन्होंने धार्मिक अन्धविश्वास एवं पाखण्ड को समाज के लिए घातक बताया और कहा कि इससे समाज अन्धकार की ओर जा रहा है।

युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी ने कहा कि महर्षि दयानन्द जी ने समाज को निर्भीकता का पाठ पढ़ाया और देश को आजाद कराने के लिए पूरे देश में विशेष चेतना पैदा की। जिसके परिणामस्वरूप जब देश की आजादी का आन्दोलन चला तो आन्दोलन में भाग लेने वाले लोग महर्षि दयानन्द जी के विचारों से प्रेरित हुए। महर्षि दयानन्द जी ने राष्ट्र को मानवतावादी दृष्टिकोण देते हुए व्यवस्था दी कि सबको उन्नति का समान अवसर मिलना चाहिए। इसके लिए राज्य की ओर से ऐसा नियम बनाया जाये कि देश में पैदा होने वाले हर बच्चे को शिक्षा और चिकित्सा का निःशुल्क एवं समान अधिकार मिले और नशामुक्त समाज का निर्माण हो। उन्होंने कहा कि छोटे–मोटे सब मतभेद को भुलाकर एक साथ मिलकर कार्य करने की आवश्यकता है।

मंच संचालक डॉ. नवीन आर्य ने युवा पीढ़ी को आर्य समाज से जोड़ने की अपील की और कहा कि हमें तर्कपूर्ण बातें युवाओं के बीच में प्रचारित करनी चाहिए ताकि वे वैदिक सिद्धान्तों से परिचित हो सकें। युवा सदैव विद्रोही होते हैं और वे जल्दी प्रभावित किये जा सकते हैं।

कार्यक्रम में पधारे सभी आमंत्रित नेताओं, मुख्यअतिथि एवं विशिष्ट अतिथि आदि को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। समारोह में लगभग 50 विशेष आमंत्रित महानुभावों को केसरिया पगड़ी पहनाई गई थी जिससे मंच की शोभा अलग ही प्रकट हो रही थी। श्रोताओं में अद्भुत जोश एवं उत्साह था। कार्यक्रम में उपस्थित सभी आर्यजनों ने संकल्प लिया कि वे आर्य समाज की गतिविधियों को तीव्र गति प्रदान करेंगे। नई आर्य समाजों की स्थापना की जायेगी, आर्य युवक परिषद् का संगठन मजबूत किया जायेगा, जन चेतना यात्राओं, नुक्कड़ सभाओं, संगोष्ठियों एवं सम्मेलनों के माध्यम से प्रचार कार्य किया जायेगा। समारोह के अन्त में प्रीति भोज की सुन्दर व्यवस्था की गई थी जिसे सभी ने ग्रहण किया। कार्यक्रम सफलता के साथ सम्पन्न हुआ।

यथार्थ परिप्रेक्ष्य में 'वैदिक संस्कृति'

– रत्नप्रकाश इन्द्रमोहन आर्य तिवारी

वैदिक संस्कृति में 'धर्म' की मान्यता अतिमहत्त्वपूर्ण है। मनुष्य जन्म का उद्देश्य आत्मा तथा परमात्मा को जानना है। धर्म कोई दिखावे या आडम्बर की वस्तु नहीं हैं। धर्म जीवन में प्रत्येक पद पर और प्रत्येक पल आचरण की वस्तु है। धर्म की मोटी परिभाषा अधर्म से बचना है, क्योंकि पाप न करना, पुण्य का प्रथम प्रयत्न अथवा परिणाम है। आज के आधुनिक युग में धर्म मात्र दिखावे की वस्तु बन गई है। क्योंकि एक तरफ हम धार्मिक होने का दिखावा करते हैं, तो दूसरी ओर पापाचरण में लगे रहते हैं। मनुष्य धर्माचरण तो करना चाहता है, किन्तु दूसरी ओर अधर्म को छोड़ना नहीं चाहता, जिसके कारण आज नये–नये मत–पंथों की बाढ़ आ रही है।

वैदिक संस्कृति ही विश्व की प्राचीन तथा महानतम संस्कृति है। इसीलिए इसे हमारे ऋषि, मुनियों ने वेदप्रतिपादित ''सा प्रथमा संस्कृति विश्ववारा'' को सिद्ध कर दिखलाया हैं। जिन परिष्कृत भावनाओं और संस्कारों के आधार पर समाज में मनुष्य अपने व्यवहार से इस प्रकार के उदाहरण प्रस्तुत करता है कि जिसमें व्यक्ति का केवल अपना स्वार्थ सिद्ध न होकर प्राणिमात्र का हित हो, इन विचार–परम्पराओं का नाम ही 'संस्कृति' हैं। वैदिक संस्कृति में जीवनयापन का जो उच्च आदर्श रखा है, वह अन्य किसी, संस्कृति या विचारों में नहीं हैं। इस रहस्य को समझने के लिए वेदों तथा उपनिषदों का संस्कार के प्रति जो यथार्थवादी दृष्टिकोण रहा है, उसे समझने तथा जानने की आवश्यकता है।

संसार में दो तरह की संस्कृतियाँ हैं, पहली भोगवादी जिसे हम 'भौतिकवादी संस्कृति' कहते हैं तथा दूसरी 'अध्यात्मवादी संस्कृति'। भौतिकवादी संस्कृति संसार के सुख–ऐश्वर्यों को भोगना तथा आत्मा–परमात्मा जैसे तत्वों को न मानना है। भौतिकवादी संस्कृति का आधार आधुनिक विज्ञान की मान्यताएँ हैं, जबकि अध्यात्मवादी संस्कृति जिसे हम वैदिक संस्कृति मानते हैं, जिसका वैदिक दृष्टिकोण समन्वयात्मक हैं, न निरा भोगवादी है, न निरा त्यागवादी हैं। ईश्वर ने सृष्टि जीवों के उपभोग के लिए ही बनाई है। सारे संसार का वैभव मनुष्य के उपभोग के लिए ही तो हैं, यजुर्वेद में कहा है, 'तेन त्यक्तेन भुंजीथाः।' – शरीर तथा संसार सत् है, इसलिए इनका भोग करो, परन्तु ये अन्त तक टिकने वाले नहीं हैं। इसलिए संसार को त्याग भाव से भोगो। जैसे हम यात्रा के समय किसी होटल में रूकते हैं। वहाँ की हर वस्तु का हम उपभोग लेते हैं, तथा होटल छोड़ते समय हम अपने अगले लक्ष्य की ओर बढ़ जाते हैं। वहाँ की वस्तुओं से हमें तनिक भी मोह नहीं होता।

भोग तो भोगने के लिए ही हैं, किन्तु उसमें फंसकर हमें अपने लक्ष्य को नहीं भूलना है। उपनिषदों ने लक्ष्य के सम्बन्ध में कहा है 'नाल्पे सुखमस्ति भूमा वै सुखम्।' यह लक्ष्य 'भूमा' अर्थात् अनन्त को पाने का है, जो भोग हमें भोगने चाहिए, वे भोग ही हमें भोग लेते हैं, मगर भोगों के प्रति हमारी तृष्णा समाप्त होने का नाम ही नहीं लेती। ईश्वर ने इन भोगों द्वारा सुखों की मात्र झलक ही हमें दिखलाई हैं। सच्चा सुख तो मात्र ईश्वर प्राप्ति में ही हैं और वही हमारा 'लक्ष्य' होना चाहिए। ऋग्वेद का 'इन्द्र अगस्त्य संवाद' इसी बात की पुष्टि करता है। इन्द्र ईश्वर का प्रतिनिधित्व करता है तथा अगस्त्य जीवात्मा का। गर्भस्थ जीव अष्टममास में अपनी बुद्धि में विचार कर रहा है कि बार–बार जन्म–मरण के चक्कर में पड़कर मैने बहुत यातनाएँ भोगी है। इस बार जन्म लेकर मैं साख्य तथा योग का अभ्यास करूँगा। अर्थात् इसके अभ्यास से जन्म–मरण के चक्कर से छूटने का उपाय करूँगा। मगर दशममास में उत्पन्न होकर बाहर की वायु का स्पर्श पाकर, अपनी उस ईश्वर के सम्मुख की प्रतिज्ञा को भूल जाता है। तब इन्द्र (परमेश्वर) कहता है कि 'जीव का चित्त परिवर्तनशील है। जीव जन्म लेकर सांख्य योग के अभ्यास की अपनी पूर्व प्रतिज्ञा को छोड़ अपने प्राणों के पोषण में लग जाता है।

वैदिक संस्कृति सृष्टिनियमानुकूल त्यागभाव पर ही आधारित है। इसका मूल इसी भाव में निहित है। जिससे संसार में सुख–शान्ति स्थापित हो सकती है। संसार में हर वस्तु को समयानुसार स्वेच्छा से या बलपूर्वक त्यागना ही पड़ता है। यदि स्वेच्छापूर्वक कार्य होगा, तो वह दुःख का कारण नहीं बन पायेगा, और यदि बलपूर्वक होगा तो उससे दुःख उठाना ही पड़ेगा। इसीलिए वैदिक संस्कृति में 'आश्रमव्यवस्था' को महत्त्वपूर्ण माना गया है। आयु के अनुसार आश्रमव्यवस्था हमारे जीवन यापन का उचित ढंग तथा निहितकार्य का निर्देशन करती है। इसी तरह वैदिक वर्णव्यवस्था हमारे सामाजिक जीवन के प्रति हमारे उत्तरदायित्वों का निर्देशन करती हैं। समाज के जो शत्रु हैं, जैसे अज्ञान, अन्याय, अभाव तथा आलस्य। इन्हें अपने–अपने सामर्थ्यानुसार उस–उस वर्ण के कार्य विभाग के द्वारा दूर किया जा सकता है। क्योंकि कार्य विभोजित होने से उस कार्य का उत्तम रूपेण सम्पादन हो पायेगा।

वैदिक संस्कृति में यह कार्य गुरुकुलों में आचार्यों द्वारा हुआ करता है। जो जिस कार्य के योग्य होगा, उसे उसी कार्य को वरण करने का निर्देश आचार्य द्वारा किया जाता है। वैदिक संस्कृति त्याग में निहित स्वेच्छावृत्ति को मानती हैं। अपनी इच्छाविरूद्ध बलपूर्वक कराये गये 'त्याग' को वह नहीं मानती। अपनी किसी वस्तु को बलपूर्वक किसी के द्वारा छीन लिया जाना और अपनी किसी वस्तु को वापस न ले पाने की असमर्थता को त्याग कहना, यह त्याग की मूलभावना को न समझना ही है। वैदिक संस्कृति अन्याय सहने को गलत मानती है। इतिहास गवाह है कि महाराज राम ने रावण के अन्याय के विरूद्ध अपने क्षत्रिय धर्म का परिचय देते हुए रावण को पराजित कर उसका अर्जित राज्य उसके भाई बिभीषण को सौंप दिया। उन्हें उस राज्य का किंचित भी मोह नही हुआ, यही त्यागभाव का वास्तविक अर्थ है।

वैदिक संस्कृति में 'धर्म' की मान्यता अतिमहत्त्वपूर्ण है। मनुष्य जन्म का उद्देश्य आत्मा तथा परमात्मा को जानना है। धर्म कोई दिखावे या आडम्बर की वस्तु नहीं हैं। धर्म जीवन में प्रत्येक पद पर और प्रत्येक पल आचरण की वस्तु है। धर्म की मोटी परिभाषा अधर्म से बचना है, क्योंकि पाप न करना, पुण्य का प्रथम प्रयत्न अथवा परिणाम है। आज के आधुनिक युग में धर्म मात्र दिखावे की वस्तु बन गई है। क्योंकि एक तरफ हम धार्मिक होने का दिखावा करते हैं, तो दूसरी ओर पापाचरण में लगे रहते हैं। मनुष्य धर्माचरण तो करना चाहता है, किन्तु दूसरी ओर अधर्म को छोड़ना नहीं चाहता, जिसके कारण आज नये–नये मत–पंथों की बाढ़ आ रही है। क्योंकि हमने धर्म के वास्तविक अर्थ को जाना ही नहीं है। हम तो मात्र धर्म की अमान्यता के डर को भुलाने के लिए धार्मिकता का प्रदर्शन कर रहे हैं। आज के आधुनिक युग में धर्म को हमने फैशन समझ लिया है। महाराज मनु द्वारा निर्दिष्ट धर्म के लक्षणों को हमने कभी जानने और आचरण में लाने का प्रयास ही नहीं किया है। आजकल सभी ओर वैदिक सिद्धान्तों की अवमानना हो रही है।

जिस तरह विज्ञान की मान्यताएँ उसके प्रात्यक्षिकों द्वारा मान्य की जाती हैं, उसी तरह पतंजलि मुनि ने वेदों की मान्यताओं को योगदर्शन द्वारा प्रत्यक्ष कर दिखाया है। अष्टांग योग द्वारा ईश्वर सिद्धि का मार्ग बताया है।

आधुनिक विज्ञान की मान्यताएँ समय–समय पर बदलती रहती हैं। उनमें परिवर्तन, परिवर्धन की आवश्यकता होती है, मगर हमारी योग सम्बन्धी मान्यताओं को हमारे ऋषि, मुनि तथा योगिजनों ने सिद्धकर दिखाया है, हमें मात्र उस तपः पूर्ण मार्ग का अनुकरण करने की आवश्यकता है। योग को जन–जन तक पहुँचाने का महत्त्वपूर्ण कार्य हमारे महापुरुषों ने कर दिखाया है, आगे उसे अपनाकर अपने जीवन को वैदिक संस्कृति के अनुरूप बनाना हमारा कार्य है। योग ने यम–नियमों के पालन को अतिमहत्त्वपूर्ण माना है, जिससे स्वयं में तथा समाज में अनुशासन प्रस्थापित होगा। वैदिक संस्कृति में पतंजलि मुनि के पाँच यमों को मानव समाज के जीवनरूप भवन का आधारस्तम्भ माना है, जिसके पालन से मनुष्य भोगवादी संस्कृति से छूटकर ईश्वर प्राप्ति के मार्ग पर अग्रसर हो सकता है। यम हैं – अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य तथा परिग्रह, जिन्हें जानना अति आवश्यक है।

1) अहिंसा – अहिंसा का अर्थ है हिंसा से बचना। हिंसा तीन प्रकार की होती है – कायिक, वाचिक और मानसिक। अहिंसा आध्यात्मिक उन्नति की ओर ले जाती है जो कि वैदिक संस्कृति का सूचक है। वैदिक संस्कृति का भवन इसी अहिंसा के स्तम्भ पर खड़ा है, जो आज की बढ़ती हिंसा की प्रवृत्ति को रोक सकता है और सबके लिए 'जिओ और जीने दो' का पाठ सिखाता है।

2) सत्य – सत्य तो प्रकाश स्वरूप है, सत्य को पतंजलि मुनि ने 'महाव्रत' कहा है। जो मन में हो, वह वाणी से निकलना चाहिए तथा जो वाणी से कह दे, वह कर्म में आना चाहिए। आज जीवन इससे विपरीत चल रहा है। इसका परिणाम हमारे व्यक्तिगत तथा सामाजिक जीवन में दिखाई दे रहा है। वैदिक संस्कृति का कहना है 'अनृतात् सत्यं गमय' झूठ से निकलकर सत्य के मार्ग पर चलने की प्रार्थना की गई है।

3) अस्तेय – स्तेय का अर्थ है चोरी व अस्तेय का अर्थ है चोरी न करना। यद्यपि सभी लोग चोरी को बुरा कहते हैं, मगर सूक्ष्मतासे देखा जाये तो सभी लोग किसी ना किसी प्रकार की चोरी करते हुए दिखाई देते हैं। क्योंकि दूसरे की वस्तु छल–कपट से दूसरे के बिना जाने उड़ा लेना या बलपूर्वक छीन लेना चोरी ही है। मगर वैदिक संस्कृति इससे भी आगे जाकर यह मानती है कि चोरी जब पकड़ी जाये, तब चोरी कहलाती है, मगर मन में उसका विचार आना भी चोरी जैसा ही है। अतः 'अस्तेय' के इसी अर्थ को मानना चाहिए।

4) ब्रह्मचर्य – अर्थात् ब्रह्म के समान 'महान बनना।' अपने जीवन को छोटे से बड़ा बनाने का प्रयत्न करना। ब्रह्मचर्य का एक अर्थ यह भी है कि अपनी इन्द्रियों पर संयम रखना और उसमें भी अपनी कामवासना पर विजय पाना।

आज का समाज विषय वासना में डूबा हुआ है, जिसके दुष्परिणाम आज देखने को मिल रहे हैं। हर क्षेत्र में आज सैक्स ही सैक्स दिखलाई पड़ रहा है। आज हम पाश्चात्य संस्कृति का अंधानुकरण कर ब्रह्मचर्य के महत्त्व को भूल बैठे हैं। इसके परिणाम स्वरूप बलात्कार जैसी घटनाएँ आज सामान्य होती जा रही हैं। आज राष्ट्रीय दूरदर्शन जैसे प्रसार माध्यमों द्वारा 'कंडोम' का विज्ञापन ज्यादा ही जोर शोर से दिखाया जा रहा है। हमारी सरकार हमें जानवरों से भी गया–बीता समझ रही है, क्योंकि आजतक जानवरों को भी यौन शिक्षा की आवश्यकता नहीं पड़ी, जो कि शिक्षित कहलाने वाले मनुष्यों को आज दी जा रही है। इसके विपरीत संस्कारों को वैदिक संस्कृति के आधार स्तम्भ माने जाने वाले 'ब्रह्मचर्य' की शिक्षा हमारे विद्यालयों तथा महाविद्यालयों में अनिवार्य करनी चाहिए।

(5) अपरिग्रह – परिग्रह का अर्थ होता है 'संग्रह करना'। अपनी आवश्यकताओं से अधिक वस्तुओं का जुटाना। हमारी संस्कृति त्याग पर आधारित है। संसार का नियम 'अपरिग्रह' का है, छोड़ने का है। अस्तेय के विषय में हमने जाना कि किसी दूसरे की वस्तु का मोह न करना, यह ठीक भी है। बहुत से लोग कहते हैं हम किसी दूसरों की वस्तु का मोह नहीं करते। अपना जो कुछ है, उसी से काम चलाते हैं, मगर वैदिक संस्कृति इससे एक कदम आगे चलकर कहती हैं कि, 'अस्तेय' का पालन करना तो ठीक है, मगर 'अपरिग्रह' का वास्तविक अर्थ अपने अधिकार की वस्तु का स्वेच्छापूर्वक त्याग करना है। आज हम समाज में बहुत लोगों को देखते हैं, जो लोकेषणा में बड़े–बड़े काम चंदा इकट्ठा कर करते हैं। मगर अपनी गाँठ को ढीली नहीं करना चाहते, धन सम्पन्न होते हुए भी न देना 'अपरिग्रह' के वास्तविक अर्थ को न जानना ही है।

ईश्वर ने सृष्टि आरम्भ में ही इसका समाधान वेद द्वारा कर रखा है। जिस प्रकार बाजार में आई नई वस्तु के साथ अल्पबुद्धि, उत्पादक मनुष्य उस वस्तु के व्यवहार का पूर्ण विवरण दे देते हैं, तो ईश्वर बिना ज्ञान के कैसे मनुष्य को सृष्टि में भेज देता?हमें मात्र उस ज्ञान को अपनाने और अध्ययन कर अनुकरण करने की आवश्यकता है। जिज्ञासा मनुष्य से सब कुछ करवा लेती हैं। हमारे सामने पाश्चात्य लोगों का उदाहरण है – वेदों के अध्ययन हेतु उन्होंने भाषा को सीखा और वेदों का अध्ययन कर उसकी वास्तविकता को माना। मगर हाय रे हमारे देश के युवक युवतियाँ! जिन्हें सूर्य उदय देखना भी नसीब नहीं होता, मगर जिस दिन वे सूर्योदय को देख लेंगे, उस दिन से निश्चय ही कुछ अधिक जानने की जिज्ञासा उनमें उत्पन्न होगी, ईश्वर सभी को सद्बुद्धि प्रदान करें।

– श्रद्धा निवास, कटघरपुरा,
किल्लेधारूर, जिला–बीड़

वैदिक नित्य कर्म विधि

इस पुस्तक में प्रातःकाल के मन्त्र, सन्ध्या, ईश्वर स्तुति, प्रार्थना मन्त्र, दैनिक यज्ञ, स्वस्तिवाचन, शान्तिकरण, विशेष यज्ञ और विशेष आहुतियाँ, अमावस्या, पूर्णिमा आदि के विशेष मन्त्र, ईश्वर प्रार्थना, पचास भजन संग्रह आदि के अतिरिक्ति जन्मदिन, वर्षगांठ, सगाई, गोद भरना, वर तथा बारात का स्वागत, व्यापार का शुभारम्भ, भवन शिलान्यास, क्रिया सम्बन्धी (उठाला), यात्रा-गमन, शुद्धि संस्कार पद्धति, यजुर्वेद के 40वें अध्याय से युक्त सभी आर्यों के पर्वों के मन्त्र आर्य पर्व पद्धति भी सम्मिलित है। विशेष बात यह है कि सब मन्त्र मोटे और लाल, सभी मन्त्र अर्थ सहित और कविता पाठ में भी और प्रत्येक मन्त्र के आरम्भ में ओ३म् भी मुद्रित है। 23x36 का बड़ा साईज, आकर्षक टाईटिल तथा पृष्ठ संख्या 176, संशोधित एवं परिवर्द्धित संस्करण, मूल्य एक प्रति 275/- रुपये डाक व्यय अलग होगा ।

पुस्तक मंगाते हेतु हमारे निम्न खाते में राशि भेजकर फोन पर सूचित करें:-

मधुर प्रकाशन
खाता संख्या : 0127002100058167
IFSC Code : PUNB0012700
पंजाब नेशनल बैंक, आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2

मधुर प्रकाशन
दिल्ली-110006

पंजीयन संख्या (R.N.I. No.)- DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/2024

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य समाज के त्यागी, तपस्वी एवं तेजस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें :- *www.facebook.com/SwamiAryavesh* व फेसबुक पेज को लाइक करें तथा अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई-मेल : aryavesh@gmail.com

Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :-

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

प्रो० विठ्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (दूरभाष : 011-23274771)
सम्पादक : प्रो० विठ्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ईमेल : *sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com* वेबसाइट : *www.vedicaryasamaj.com*
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।